Krishna Nand BMA I Hons (1)

व्यक्तित्व विकास में लैंगिक विकास की व्याख्या कीजिए।

Ques → Describe the significance infantile sexual in the development of personality.

Ans. Sigmund Freud के मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा में मनोलैंगिक विकास का सिद्धांत सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। Freud ही सबसे पहला व्यक्ति थे जिन्होंने व्यक्तित्व विकास में sex को बहुत अधिक महत्व दिया है और इसके द्वारा व्यक्तित्व विकास में लैंगिक विकास के महत्व को समझने का प्रयास किया है। Freud ने sex का अर्थ सामान्य विचारधारा से भिन्न एवं विस्तृत संदर्भ में प्रस्तुत किया है। सामान्य लोगों के लिए दो विषम लिंगी प्राणियों के बीच शारीरिक सम्पर्क द्वारा की जाने वाली लैंगिक सम्भोग को sex माना जाता है और यानी ऐसी लैंगिक क्रियाओं की शुरुआत किशोरावस्था से करता है। लेकिन Freud ने यह स्पष्ट रूप से बताया है कि लैंगिक क्रियाओं की शुरुआत व्यक्ति के शैशवकाल से ही होता है और उम्र बितने के साथ-साथ उसका विकास शारीरिक एवं मानसिक विकास के समान ही होता है। Freud ने sex शब्द का उपयोग मुख्य रूप से तीन अर्थों में किया है।

(i) sex शब्द प्राणी की विशेषताओं के लिए प्रयुक्त होता है, जिन विशेषताओं के आधार पर प्राणियों को नर मादा या स्त्री-पुरुष के रूप में विभाजित किया जाता है।

(ii) sex शब्द का अर्थ ज्ञानेन्द्रियों की क्रिया से है।

(iii) sex शब्द का अर्थ भावनात्मक आकर्षण से है, इसी आकर्षण के कारण विपरीत लिंग के लोग एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं। यह आकर्षण विपरीत लिंग के साथ-साथ समलिंगी लोगों में भी पाया जाता है।

Freud ने मनोलैंगिक उत्पत्ति सिद्धांत के आधार पर व्यक्तित्व विकास की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने यह बताया कि Libido व्यक्ति के जन्म के समय से ही मौजूद होते हैं और विभिन्न मनोलैंगिक अवस्थाओं से होते हुए व्यक्ति के उम्र बीतने के साथ-साथ लैंगिक शक्ति का विकास होता है। उन्होंने व्यक्तित्व विकास में बाल्यावस्था के प्रारंभ के कुछ वर्षों को अधिक महत्व दिया है। लैंगिक विकास के प्रत्येक अवस्था में एक प्राथमिक कामुकता क्षेत्र का विकास होता है। प्राथमिक कामुकता क्षेत्र शरीर के उस क्षेत्र को कहते हैं जो संबन्धित लैंगिक अवस्था, लैंगिक उत्तेजना का केन्द्र बिन्दु होता है। Freud ने व्यक्तित्व विकास का वर्णन मनोलैंगिक विकास के मुख्य पाँच अवस्थाओं की सहायता से किया है, ये अवस्थाएं एक दूसरे से सापेक्षिक रूप से भिन्न हैं लेकिन इन अवस्थाओं के बीच घनिष्ठ संबन्ध पाया जाता

क्योंकि व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की विकृति (उत्पन्न) हो जाती है। Freud का विचार है कि बालक में बाल्यावस्था संतुष्टि में बाधा उत्पन्न होने पर बालक, व्यस्कता में उसमें अतिनिर्भरता, उत्साह-विषाद, आत्मविकृति तथा व्यक्तित्व दोष उत्पन्न हो सकते हैं। यदि मौखिक चूसन की निरंतरता बनी रहती है तो बड़े होने पर खानपान की अनेक विकारें तथा उनके विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। जैसे- धूम्रपान, चाय, कॉफी इत्यादि पेय पदार्थों का सेवन, मद्यपान, चुम्बन इत्यादि मुखीय चूसन के अवस्था के प्रति विलम्बित व्यवहार का परिणाम है।

(ii) oral biting— यह मौखिक विकास के अवस्था का दूसरा स्तर है। यह अवस्था शिशु की छः माह की आयु से लेकर डेढ़ आयु का होता है। इस अवस्था में उसकी दाँत शरीर का हिस्सा उगने शुरू होते हैं और मौखिक चूसन की अवस्था की विशेषतायें नहीं रहती है। Erikson (1948) के शब्दों में— "In the oral biting stage the aim and mode of pleasure findings is in biting as well as in sucking and swallowing."

इसलिए इस अवस्था में बालक के आनन्द की अनुभूति उभयभावी (ambivalent) या दुविधापूर्ण होता है। दूसरे शब्दों में एक ओर से बालक अपनी माँ से प्रेम करता है, क्योंकि माँ के द्वारा उसकी इच्छाओं की संतुष्टि होती है, दूसरी ओर वह अपनी माँ से घृणा भी करता है क्योंकि अवस्था में बालक की ओर ध्यान देना कम कर देती है। इस अवस्था के बच्चे को अपने शरीर से सुख की प्राप्ति होती है और इस सुख के प्राप्ति के प्रति यह प्रेमशील होता है। बच्चे का अपने स्वयं से प्रेमानुभव प्रेम Narcissism कहलाता है Narcissism शब्द यूनानी पौराणिक कथा से संबंधित है। Narcissus नामक युवक अपने समय का अत्यन्त सुन्दर युवक था। इस युवक को Nemesis नामक एक देवी ने श्राप दी थी कि अपने सुन्दर शरीर पर मोहित होते ही वह समाप्त हो जाएगा। फलस्वरूप श्राप के कारण एक दिन वह नदी के जल में प्रतिबिंब को देखकर वह अपने ही प्रतिबिम्ब पर मोहित हो गया कि वह अचानक नदी में कूदकर मर गया और कुछ समय बाद वह जिस स्थान पर डूबा था, एक अलौकिक मनमोहक फूल निकला। आधुनिक युग में नरगिस का फूल उसी के नाम से जाना जाता है।

लगभग 1½ वर्ष की अवस्था में बच्चों को दाँतें भी निकल जाती हैं और कभी-कभी इस अवस्था के अन्त तक दूसरा बच्चा पैदा हो जाता है। नये बच्चा के आगमन के फलस्वरूप पहला बच्चा उससे ईर्ष्या करने लगता है, क्योंकि माता-पिता का ध्यान नये बच्चे की ओर ज्यादा केन्द्रित हो जाता है और पहले बच्चे